Toppersnotes
Unleash the topper in you

मध्य प्रदेश, जेल विभाग

जेल प्रहरी

Madhya Pradesh Professional Examination Board

भाग – 4

सामान्य अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

मध्यप्रदेश सामान्य ज्ञान

1. सामान्य परिचय 1
2. मध्यप्रदेश का इतिहास 6
    - प्राचीन काल
    - मध्य काल
    - आधुनिक काल
3. अन्य महत्वपूर्ण तथ्य 19
4. प्रमुख समाचार पत्र 20
5. प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व 20
6. मध्यप्रदेश कला एवं संस्कृति 30
    - पर्यटन, दुर्ग, महल
    - साहित्यकार, संगीतकार
    - लोकगायन, लोकनृत्य, लोकनाट्य
    - मेले, लोकचित्रकला, शिल्पकला
    - पर्व एवं उत्सव
    - प्रमुख स्थल
7. मध्यप्रदेश की राजनैतिक व्यवस्था 38
    - राज्य का गठन
    - राज्यपाल, मुख्यमंत्री, विधानसभाध्यक्ष
    - राज्य मानवाधिकार आयोग, लोकायुक्त एवं उपलोकायुक्त
    - वित्त आयोग, पिछडा वर्ग आयोग
    - मुख्य सचिव
    - प्रशासनिक ढाँचा
8. मध्यप्रदेश में पुलिस प्रशासन 45
9. मध्यप्रदेश का भूगोल 47
    - भू-वैज्ञानिक संरचना
    - भारत में मध्यप्रदेश की स्थिति
    - भौगोलिक स्वरूप (पर्वत, पठार)
    - नदियाँ, परियोजनायें
    - जलवायु, मिट्टी, खनिज संपदा
    - वन एवं वन रिपोर्ट, वन्य जीव संरक्षण
    - प्रमुख उद्योग, परिवहन, संचार
    - ऊर्जा, जनसंख्या, कृषि, पशुपालन
    - कल्याणकारी योजनायें, खेल

भारत सामान्य ज्ञान

1. भूगोल 85
2. इतिहास 95
3. संविधान 105
4. अर्थव्यवस्था 105
5. विविध सामान्य ज्ञान 122

- राष्ट्रीय उद्यान, अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखायें, नृत्य
- प्रमुख व्यक्तित्व, राज्य, जनसंख्या, राजनैतिक व्यक्तित्व
- अद्धितीय भारत, विश्व धरोहर स्थल, अविष्कार
- अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, देश एवं मुद्रायें, पुस्तक एवं लेखक
- महत्वपूर्ण दिवस, खेलकूद, भारत एवं राजदूत
- प्रमुख जलसंधिया, प्रमुख पर्यावरणीय सम्मेलन इत्यादि

मध्यप्रदेश राज्य का परिचय

स्थापना :- 1 नवम्बर, 1956
पुनर्गठनः- 1 नवम्बर, 2000 ई.
भौगोलिक अवस्थिति :-
21° 6 से 26° 30 उत्तरी अक्षांश एवं
74° 9 से 82° 48 उत्तरी-पूर्वी देशान्तर के मध्य

सीमा से लगे राज्य व उनके जिले

- उत्तरप्रदेशः- आगरा, इटावा, उरई, झाँसी, ललितपुर, हमीरपुर, बाँदा, इलाहाबाद, मिर्जापुर व सोनभद्र
- छत्तीसगढः- सरगुजा, बिलासपुर व दुर्ग
- राजस्थानः- बाँसवाडा, चित्तौडगढ, झालावाड, बारां, सवाई माधोपुर, धौलपुर व कोटा
- गुजरातः- बडोदरा
- महाराष्ट्रः- धुले, भुसावल, अमरावती, नागपुर व भण्डारा
- क्षेत्रफलः- 3,08, 252 वर्ग किमी
- विस्तारः- पूर्व से पश्चिम- 870 किमी. एवं उत्तर से दक्षिण - 605 किमी.
- राजधानीः- भोपाल
- मुख्य भाषाः- हिन्दी
- कुल जनसंख्याः- 7,26,26,809
- पुरूषः- 3,76,12,306
- महिलाः- 3,50,14,503
- जनसंख्या वृद्धि दरः- 20:30 प्रतिशत (दशकीय)
- जनसंख्या घनत्वः- 236 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.
- लिंगानुपातः- 931: 1000
- साक्षरता :- 60.30 प्रतिशत
- अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्याः- 1,53,16,784
  पुरूषः- 77,19,404
  महिला :- 75,97,380
- कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजातियों का प्रतिशतः- 21.10 प्रतिशत
- अनुसूचित जातियों की कुल जनसंख्या :- 1,13,42,320
  पुरूष :- 59,08,638
  महिला :- 54,33,682
- कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजातियों का प्रतिशतः- 15.6 प्रतिशत
- कार्य सहभागिता दर 42.74
- कुल संभावः- 10
- कुल जिले :- 52
- कुल नगरः- 394
- विकासखण्ड :- 313
- ग्राम पंचायतः- 23040
- कुल नगर निगमः- 16
- कुल नगर पालिकाएंः- 98
- कुल नगर पंचायतः- 264
- जनपद पंचायतः- 313
- जनपद पंचायत सदस्यः- 6816
- जिला पंचायतः- 52
- जिला पंचायत सदस्यः- 843
- पंचः- 3,63,337
- कुल ग्रामः- 55,393
- आबाद ग्रामः- 52,117
- सबसे छोटी तहसील (जनसंख्या):- सैंन (भिण्ड)
- सबसे बडी तहसली (जनसंख्या):- इन्दौर
- सबसे बडी तहसील (क्षेत्रफल):- मण्डला
- सबसे छोटी तहसील (क्षेत्रफल):- अजयगढ (पन्ना)
- सबसे बडा जिला (जनसंख्या):- इन्दौर
- सबसे छोटा जिला (जनसंख्या):- निवाडी
- सबसे बडा संभाग (क्षेत्रफल):- जबलपुर
- सबसे छोटा संभाग (क्षेत्रफल):- नर्मदापुरम
- सबसे घनी आबादी वाली तहसीलः- इन्दौर
- सबसे बडा नगर :- इन्दौर
- सबसे घनी आबादी वाला जिलाः- भोपाल (854)
- सबसे बडा जिला (क्षेत्रफल):- छिन्दवाडा
- सबसे छोटा जिला (क्षेत्रफल):- निवाडी

❖ राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश की सीमा को छूने वाले जिलेः- शिवपुरी, मुरैना
❖ मध्यप्रदेश एवं गुजरात की सीमा को छूने वाले जिलेः- अलीराजपुर, झाबुआ
❖ राजस्थान एवं गुजरात को छूने वाला जिलाः- झाबुआ
❖ उत्तरप्रदेश एवं छत्तीसगढ राज्य को छूने वाला जिलाः- सीधी, सिंगरौली
❖ छत्तीसगढ एवं महाराष्ट्र की सीमा को छूने वाला जिलाः- बालाघाट
❖ महाराष्ट्र एवं गुजरात को छूने वाला जिलाः- अलीराजपुर
❖ राजभाषा :- हिन्दी
❖ अन्य भाषाये :- उर्दू एवं अन्य क्षेत्रीय भाषायें
❖ प्रमुख धर्म :- हिन्दू
❖ उच्च न्यायालय :- जबलपुर (इन्दौर व ग्वालियर में खण्डपीठ)
❖ राजकीय पशु :- बारहसिंगा
❖ राजकीय वृक्ष :- बरगद
❖ राजकीय पक्षी :- दूधराज

❖ राजकीय पुष्प :- सफेद लिली
❖ राजकीय खेल :- मलखम्ब
❖ राजकीय मछली :- महाशीर

❖ मानवाधिकार आयोग गठित करने तथा मानव विकास रिपोर्ट पेश करने के मामले में देश में मध्यप्रदेश राज्य का क्रम स्थान	:- प्रथम
❖ राज्य के प्रत्येक जिले में उद्योग स्थापित करने के मामले में मध्यप्रदेश का स्थान	:- दूसरा (प्रथम पश्चिम बंगाल)
❖ विशेष क्षेत्र प्राधिकरण स्थापित करने के मामले में देश में राज्य का स्थान	:- प्रथम
❖ जिला सरकार की अवधारणा अपनाने के मामलें में राज्य का स्थान	:- प्रथम
❖ ग्राम स्वराज व्यवस्था लागू करने के मामले में राज्य का क्रम स्थान	:- प्रथम
❖ 20 सूत्री कार्यक्रम लागू करने के मामले में राज्य का क्रम स्थान	:- प्रथम
❖ 73 वें संविधान संशोधन के तहत वर्ष 1993 में पंचायती राज लागू करने के मामले में राज्य का स्थान	:- प्रथम
❖ पंचायत चुनावों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देने के मामले में देश में राज्य का स्थान	:- प्रथम
❖ हिन्दी भाषा में गजेटियर प्रकाशित करने वाला देश का राज्य	:- प्रथम
❖ हीरे के उत्पादन में मध्यप्रदेश का स्थान	:- प्रथम
❖ मैंगनीज उत्पादन में मध्यप्रदेश का स्थान	:- दूसरा
❖ ताँबा के उत्पादन में मध्यप्रदेश का स्थान	:- प्रथम
❖ देश की सबसे बडी मस्जिद प्रांगण	:- ताजुल मस्जिद (भोपाल)
❖ भारत का प्रथम ऑप्टिकल फाइबर कारखाना लगभग 200 करोड रूपए की अनुमानित लागत से राज्य के जिस स्थल पर 'नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ डिजाइन' की स्थापना की जानी है, वह है।	:- मण्डीदीप (रायसेन)
❖ अंतर्राष्ट्रीय बोरलॉग कृषि शोध (रिसर्च) संस्थान की स्थापना की जा रही है।	:- जबलपुर
❖ राज्य के 52 जिला पंचायतों के अध्यक्षों के लिए सम्पन्न आरक्षण कार्रवाई महिलाओं के लिए निर्धारित किए गए आरक्षित स्थान है।	:- 25
❖ अक्टूबर 2004 तक देश में स्थापित कुल 45 फूड पार्को में से मध्यप्रदेश की स्थिति है।	:- प्रथम (यहाँ पर इनकी संख्या 6 है।)
❖ भारत का प्रथम पर्यटन केन्द्र	:- शिवपुरी
❖ भारत का प्रथम रत्न परिष्करण केन्द्र	:- जबलपुर में
❖ देश का प्रथम 'आपदा प्रबन्धन संस्थान'	:- भोपाल में
❖ सूती वस्त्र के उत्पादन मे राज्य का क्रम स्थान	:- तीसरा (महाराष्ट्र व गुजरात क्रमशः प्रथम द्वितीय)
❖ विश्व में सबसे बडे ऊर्जा संयन्त्र का स्थल	:- भोपाल
❖ देश में प्रथम आदिवासी शोध संचार केन्द्र	:- झाबुआ
❖ राज्य निर्वाचन आयोग का गठन हुआ	:- 19 जनवरी 1994 को
❖ भारत-भवन स्थित है	:- भोपाल
❖ राज्य में पाया जाने वाला सर्वाधिक वन वृक्ष	:- सागौन (17.8 प्रतिशत)
❖ राज्य का सबसे बडा रेलवे जंक्शन	:- इटारसी (होशंगाबाद)
❖ राज्य का सबसे लम्बा पुलः-	महानदी पुल (तवा नदी पर होशंगाबाद के नजदीक 1322.56मीटर)
❖ देश का प्रथम सौर चालित टेलीफोन एक्सचेन्ज	:- आयोलपाटा (शिवपुरी)
❖ देश का प्रथम राष्ट्रीय युवा महोत्सव का स्थल है।	:- भोपाल (जनवरी 1995)
❖ राज्य में सर्वप्रथम नगरपालिका स्थापित हुई	:- दातिया में (1907 में)
❖ भोपाल गैस काण्ड घटित हुआ	:- 2 दिसम्बर की रात, 1984

❖ भारत का जिब्राल्टर उपनाम है।	:- ग्वालियर किले का
❖ राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाया गया	:- 3 बार
❖ राज्य की प्रथम किन्नर महापौर	:- कमला बुआ (सागर)
❖ राज्य में सर्वाधिक ताँबे की खान	:- बालाघाट में
❖ राज्य का प्रथम हाइवे एक्सप्रेस मार्ग	:- इन्दौर-भोपाल
❖ सतना का मझगवाँ संबंधित है	:- हीरे के खान से
❖ राज्य में सर्वाधिक प्रसार वाला समाचार पत्र	:- दैनिक भास्कर
❖ राज्य का पहला सैलरिच जैविक खाद्य संयन्त्र स्थापित है	:- भोपाल में (कृषि उद्योग विकास निगम)
❖ रिलायन्स समूह द्वारा अल्ट्रा मेगा प्रोजेक्ट राज्य के जिस जिले में स्थापित की जानी है, वह है	:- (सॉसन) सिंगरौली
❖ राज्य का सबसे बडा शक्कर कारखाना बरलाई	:- सीहोर
❖ सहकारी क्षेत्र का सबसे बडा शक्कर कारखाना	:- बरलई
❖ राज्य का एकमात्र वेधशाला स्थल	:- इन्दौर मे
❖ एशिया की सबसे बडी भूमिगत मैंगनीज खदान स्थित है	:- भर्वेली (बालाघाट)
❖ देश का एकमात्र विकलांग पुनर्वास केन्द्र	:- जबलपुर
❖ राज्य का एकमात्र सैनिक अड्डा	:- महाराजपुर (ग्वालियर)
❖ राज्य की सबसे बडी जनजाति	:- भील
❖ देश का पहला सोयाबीन वायदा बाजार	:- इन्दौर में
❖ राज्य की ऊर्जा राजधानी	:- बैढन (सिंगरौली)
❖ देश में सर्वाधिक फेल्सपार पाया जाने वाला राज्य का जिला	:- जबलपुर
❖ राज्य में चन्देरी की साडियों का निर्मित करने वाला जिला	:- अशोकनगर
❖ राज्य सरकार द्वारा ललित कला क्षेत्र में दी जाने वाला जिला	:- अमृता शेरगिल फैलोशिप
❖ राज्य में 'झीलों का शहर' उपनाम से नामित जिला	:- भोपाल
❖ राज्य में बाबा शहाबुद्दीन औलिया के नाम पर उर्स आयोजित करनेव वाला जिला	:- नीमच
❖ मध्यप्रदेश की जनजाति को आदिवासी नाम से सुशोभित करने वाला व्यक्ति	:- ठक्कर बापा
❖ सबसे कम समय तक रहने वाले राज्य के मुख्यमंत्री	:- अर्जुन सिंह (11 मार्च 1985 से 12 मार्च 1985 मुख्यमंत्री एक दिन)

- ❖ शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से दो राज्य :- उज्जैन (महाकालेश्वर का प्रसिद्ध शिवमंदिर) के जिले में स्थिति ओंकारेश्वर (ममलेश्वर ज्योर्तिलिंग शिव मंदिर) जिला खण्डवा
- ❖ राज्य का सर्वाधिक ठण्डा स्थल:- पचमढी
- ❖ यूरेनियम खनिज पाया जाने वाला राज्य का एकमात्र जिला :- शहडोल
- ❖ राज्य में बैंक नोट प्रेस है :- देवास में
- ❖ राज्य में न्यूज प्रिन्ट मिल है :- नेपानगर (बुरहानपुर)
- ❖ राज्य में सिक्योरिटी पेपर मिल है:- होशंगाबाद में
- ❖ राज्य में भारत की हैवी इलेक्ट्रिकल की औद्योगिक इकाई है :- भोपाल में
- ❖ राज्य में मानसिक चिकित्सा संस्थान है :- ग्वालियर एवं इन्दौर में
- ❖ राज्य में कैन्सर चिकित्सा संस्थान है :- ग्वालियर, इन्दौरी व जबलपुर में
- ❖ राज्य में अनुसूचित जातियों में सर्वाधिक संख्या है :- चमार (जाटव) की
- ❖ राज्य में गोण्ड जनजातियों का क्षेत्र है :- पूर्वी मध्यप्रदेश (नर्मदा तटीय क्षेत्र एवं सतपुडा वनीय अंचल)
- ❖ राज्य में पंचायती योजना की शुरूआत की गयी:- वर्ष 1976 में
- ❖ विश्वामित्र पुरस्कार दिया जाता है:- खेलों में प्रशिक्षकों को सराहनीय कार्य हेतु
- ❖ राज्य में प्रथम वायु फार्म स्थापित स्थल है:- जामगोदरानी गाँव जिला- देवास (26 जुलाई 1995)
- ❖ राज्य को नारू रोग से मुक्त राज्य घोषित किया गया। :- W.H.O द्वारा वर्ष 1984 में
- ❖ भारत में एकमात्र किन्नर विधायक वाला राज्य :- मध्यप्रदेश
- ❖ राज्य की प्रथम किन्नर विधायक :- शबनम मौसी, (अनूपपुर जिला, क्षेत्र सोहागपुर, निर्दलीय)
- ❖ मध्यप्रदेश उत्सव का आयोजन होता है:- दिल्ली में

- राज्य में विधि संस्थान की स्थापना की गयी है:- भोपाल में
- राज्य का विधानसभा भवन जाना जाता है:- 'इंदिरा गाँधी विधानसभा' के नाम से
- सहरिया जनजाति के लोग मुख्यत: राज्य के जिन संभागों में पाये जाते है, वे है:- चम्बल, ग्वालियर
- मध्यप्रदेश पुनर्गठन आयोग के अध्यक्ष थे:- फजल अली
- राज्य में निम्न पशुधन की संख्या सर्वाधिक है:- बकरी
- राज्य में अन्त्योदय योजना की शुरूआत की गयी:- ईटखेडी गाँव
- राज्य में अन्त्योदय योजना की शुरूआत की गयी:- ईटखेडी गाँव (भोपाल से)
- राज्य में अन्य वायु फार्म स्थापित होने प्रस्तावित है:- धार व बैतूल में
- यू.एन.ओ. द्वारा वर्ष 1993 को घोषित किया गया था:- आदिवासी व समीपवर्ती समूहों का वर्ष
- प्रदेश में एच.बी.जे गैस का आधारित पैट्रोकेमिकल्स कॉम्पलेक्स तथा नाइट्रोजन खाद संयंत्र स्थापित किया गया :- विजयनगर (गुना)
- राज्य के प्रमुख लोक नाट्य है:- माच (मालवा), स्वांग (बुंदेलखण्ड), छाहूर (बघेलखण्ड), काठी (निमाड)
- 15-17 दिसम्बर, 1993 तक आदिवासी और समीपवर्ती समूहों का अन्तराष्ट्रीय समारोह 'चरैवति' का आयोजन किया गया :- भोपाल स्थित इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव
- तरूण भादुडी पुरस्कार दिया जाता है:- पत्रकारिता से
- नगरीय अपशिष्ट से बहु उपयोगी जैविक खाद बनाने का संयंत्र स्थापित किया गया है:- ग्वालियर में
- राज्य में भोपाल स्थित रवीन्द्र भवन प्रसिद्ध है:- एक विशाल सभागृह के लिए
- मध्यप्रदेश शासन प्रशिक्षण अकादमी का नाया नाम है:- आर.सी.वी. नरोन्हा प्रशासनिक, अकादमी भोपाल, मध्यप्रदेश
- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) की पहल पर राज्य में टेक्नालॉजी रिसोर्स सेन्टर की स्थापना केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा प्रथम चरण में जिन स्थलों पर की जा रही है:- मनासा (नीमच), निवाडी (टीकमगढ), केसला (होशंगाबाद), तामिया (छिन्दवाडा) व सारंगपुर (राजगढ)
- राज्य में महिलाओं की औसत आयु है राज्य मे शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालय स्थित है:-57 वर्ष (जो देश में सभी राज्यों से कम है), शिवपुरी, ग्वालियर व रीवा में
- पर्यटन को बढावा देने के लिए लंदन में विश्व पर्यटन मेले के दौरान वर्ल्ड टूरिज्म काउन्सिल के साथ समझौता करने के संबंध में देश में राज्य की स्थिति है:- तृतीय
- राज्य में यूनेस्को के माध्यम से चलाये जा रहे 'पालट परियोजना' वाले जिले :- भोपाल, ग्वालियर, उज्जैन व जबलपुर
- जैन समुदाय को धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय घोषित करने के मामले में देश क राज्य की स्थिति :- प्रथम
- राज्य के जिस जिले मे इण्डिन इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्फोरमेशन टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेन्ट है :- ग्वालियर
- राज्य के किस जिले में विश्व बैंक की सहायता से माइक्रा अर्थक्वेक रिकार्डर लगाया जा रहा है:- खण्डवा में
- राज्य मे सर्वाधिक समय तक रहने वाले मुख्यमंत्री :- श्री शिवराजसिंह चौहान
- राज्य मे सर्वाधिक समय तक रहने वाले राज्यपाल :- श्री हरिविनायक पाटस्कर
- राज्य में सबसे कम समय तक रहने वाले राज्यपाल :- डॉ. वी. पट्टाभि सीतारमैया

मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध नगर व स्थलों के उपनाम

नाम	उपनाम
जबलपुर	संगमरमर नगर
भेडाघाट (जिला जबलपुर)	संगमरमर की चट्टान
भिंड-मुरैना	बागियों का गढ
उज्जैन	मंदिरों, मूर्तियों का नगर
उज्जैन	महाकाल की नगरी
उज्जैन	मंगल ग्रह की जन्मभूमि
उज्जैन	पवित्र नगर
खजुराहो (जिला छतरपुर)	शिल्पकला का तीर्थ
भीम बैठका (जिला रायसेन)	शैल चित्रकला
साँची (जिला रायसेन)	बौद्ध जगत की पवित्र नगरी
इंदौर	मिनी मुम्बई
इंदौर	अहिल्या नगरी
इंदौर	कपडों का शहर
शिप्रा (जिला इंदौर)	मालवा की गंगा
नाम	उपनाम
सिवनी	मध्यप्रदेश का लखनऊ
बालाघाट	मैंगनीज नगरी
कटनी	चूना नगरी
मांडू (जिला धार)	आनंद नगरी (सिटी ऑफ जॉय)
मांडू (जिला धार)	महलों की नगरी

पीथमपुर (जिला धार)	भारत का डेट्राइट
मालवा	गेहूँ का भंडार
ग्वालियर	तानसेन की नगरी
मैहर	संगीत नगरी
चित्रकूट (जिला सतना)	श्रीराम तीर्थस्थली
ओरछा (जिला टीकमगढ)	अयोध्या नगरी
भोपाल	झीलों की नगरी
पचमढी (जिला होशंगाबाद)	पर्यटकों का स्वर्ग
ग्वालियर	पूर्व का जिब्राल्टर
बुरहानपुर	गँजेडियों का स्वर्ग
खंडवा- खरगोन	सुनहरे जिले
बेतवा	मध्यप्रदेश की गंगा
रीवा	सफेद शेर की भूमि
धार	भोज नगरी

मध्यप्रदेश के नगरों के प्राचीन या पुराने नाम और नवीन (वर्तमान) नाम

प्राचीन या पुराने नाम	नवीन (वर्तमान) नाम
बुद्ध निवासिनी	बुधनी (जिला सीहोर)
भाबरा (झाबुआ)	चंद्रशेखर आजादनगर (जिला अलीराजपुर)
भोजताल	भोपाल
काकनाथ	लाँची (जिला रायसेन)
धारा नगरी	धार
शादियाबाद	माण्डू (जिला धार)
माण्डवगढ	माण्डू (जिला धार)
माहिष्मति	महेश्वर (जिला धार)
श्रीपुरी	सिरपुर (जिला धार)
मल्हार नगरी	इंदौर
इंदपुर	इंदौर
महू	डॉ. भीमराव अंबेडकर नगर (जिला धार)
उज्जैनी	उज्जैन
अवन्तिका	उज्जैन
कुंतलपुर	कायथा (जिला उज्जैन)
प्राचीन या पुराने नाम	नवीन (वर्तमान) नाम
कपिथ्य	कायथा (जिला उज्जैन)
दशपुर	मंदसौर
भेलसा/ बेस नगर	विदिशा
गोपाचल	ग्वालियर
वत्स	ग्वालियर (बुंदेलखण्ड क्षेत्र)
नलपुर	नरवर (जिला शिवपुरी)
जेजाकभुक्ति	बुन्देलखण्ड
त्रिपुरी	तेवर (जिला जबलपुर)
दिलीप नगर	दतिया
रिवा/भथा	श्रीवा
गढ मंडला	मंडला
खान देश	बुरहानपुर
पांचालगढ	पचमढी (जिला होशंगाबाद)
गोण्डवाना	मण्डला
खर्जुरवाहक	खजुराहो
एरिकिण	एरण (जिला सागर)
तुडीकर	दमोह क्षेत्र
शाहजहांपुर	शाजापुर
निजामत-ए-मशरीक	सीहोर
मुडवारा	कटनी

मध्यप्रदेश के नगर व राजधानी के नाम

नगर	राजधानी के नाम
भोपाल	मध्यप्रदेश की राजधानी
इंदौर	व्यावसायिक राजधानी
इंदौर	खेल राजधानी
जबलपुर	सांस्कृतिक राजधानी
पचमढी (जिला होशंगाबाद)	पर्यटन, राजधानी
पचमढी (जिला होशंगाबाद)	ग्रीष्मकालीन राजधानी
बालाघाट	मैंगनीज राजधानी
मैहर (जिला सतना)	संगीत राजधानी
सिंगरौली	ऊर्जा राजधानी

मध्यप्रदेश के प्रमुख शासकीय भवनों के नाम

भवन का नाम	कार्यालय/निवास स्थल
मिण्टो हॉल	राज्य का पुराना विधानसभा
इंदिरा गाँधी विधानसभा भवन	राज्य का नवीन विधानसभा भवन
वल्लभ भवन	राज्य सचिवालय
सतपुडा भवन	राज्य संचालनालय
शक्ति भवन	राज्य विद्युत मण्डल
ऊर्जा भवन	मध्यप्रदेश विद्युत नियामक आयोग
पर्यावास भवन	राज्य मानवाधिकार आयोग
पुस्तक भवन	मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम
निर्वाचन भवन	राज्य निर्वाचन भवन
श्यामला हिल्स	मुख्यमंत्री का निवास स्थल
राज्य आनंद संस्थान	शिवाजी नगर, भोपाल
मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग	रेसीडेंसी एरिया, इंदौर

मध्य प्रदेश का इतिहास

प्राचीन काल

(पाषाण काल)

(क) पूर्व पाषाण काल

(ख) पुरापाषाण काल या निम्न पूर्व पाषाण काल –

- पुरापापाण काल के कुछेक अवशेष मध्य भारत से प्राप्त हुए हैं । वर्तमान मध्यप्रदेश में सीधी, खण्डवा एवं मंदसौर को पुरापाषाण कालीन युग का माना जाता है ।
- पुरापाषण कालीन मध्य प्रदेश नदी घाटियां – बेतवा नदी, सोन नदी, नर्मदा नदी । मध्य प्रदेश के प्रमुख स्थल साक्ष्य ।
- होशंगाबाद के हथनोरा नामक स्थल से होमोइरेक्टस (मानक प्रजाति) का कंकाल पाया गया है ।
- यह नर्मदा नदी घाटी में है, इसका सर्वेक्षण एच. डी. सांकलिया मैक ब्राउन, आर.बी. जोशी ने किया है ।
- नरसिंहपुर एवं आदमगढ से पुरातन जीवाश्म प्राप्त हुए हैं ।

(ब) मध्य पूर्व पाषाण काल

- मध्य प्रदेश के स्थल – मण्डला, मंदसौर, नाहरगढ, सीहोर, इंदौर, भीम बैटक, सोन नदी घाटी

उच्च पूर्व पाषाण काल

- इस युग की प्रमुख विशेषता गुफा चित्रकला का विकास था ।
- मध्यप्रदेश के भीमबेटका से दो प्रकार के चित्र प्राप्त हुए हैं ।
  1. स्त्री पुरूष के चित्र
2. मैमथ (जंगली हाथी) के चित्र

- चित्रकारी में काला, लाल, पीला और सर्वाधिक नीले रंग का प्रयोग किया गया
- भीमबेटका से नीला रंग बनाने वाले पत्थर की खोज वाकणकर द्वारा 1958 ई. में की गई ।
- होशंगाबाद, आदमगढ, भोपाल के क्षेत्रों में धरमपुरी, श्यामलाहिल्स, बरखेडा, सांची उदयगिरि आदि स्थानों पर आदिम मानव के गुफा चित्र मिलते हैं ।

(ब) मध्य पाषाण काल

- मध्य प्रदेश के विंध्याचल क्षेत्र की खोज कारलायक द्वारा की गई ।
- 1964 में आर.बी. जोशी ने होशंगाबाद जिले के आदमगढ से 25 हजार उपकरण खोजें ।

(स) नव पाषाण काल

- मध्य प्रदेश के स्थल जबलपुर, ऐरण, दमोह, होशंगाबाद (आमदगढ) जतकारा, सागर । ताम्र पाषाण कालीन स्थल ।
- हडप्पा सभ्यता या सिंधु घाटी सभ्यता के साक्ष मध्य प्रदेश से नहीं मिलते ।
- महेश्वर (महिष्मती), नागदा, (उज्जैन) केरूथल (उज्जैन) ऐरण (सागर) त्रिपुरी (जबलपुर) मध्यप्रदेश के ताम्र पाषाण कालीन स्थल हैं –
- नवदाटोली, नागदा, एवं एरण से मालवा संस्कृति (1700–1200 ई.पू.) के अवशेष मिले हैं ।
- हैहय राजा माहिष्मत ने नर्मदा किनारे माहिष्मति नगरी बसाई ।
- रामायण काल में मध्य प्रदेश के अंतर्गत दण्डकारण्यक व महाकान्तार के घने जंगल थे
- राम ने वनवास के कुछ क्षण दण्डाकारण्यक (वर्तमान छतीसगढ) में बताये थे । बाद में राम का पुत्र कुश दक्षिणी कौशल का राजा हुआ ।

वैदिक काल से गुप्त काल तक

- उत्तर वैदिक काल (1000–600 ई.पू.) के समय आर्य नर्मदा घाटी तक फैले थे नर्मदा नदी के लिये रेवा या रेवात्रा शब्द का प्रयोग करते थें ।
- नर्मदा नदी पर यदु नामक कबिला तथा श्रापित पचास पुत्र महर्षि अगस्त के नेतृत्व में आकर बसे थे ।
- ऋग्वेद के दासराज्ञ युद्ध में यदु कबिले ने भाग लिया था ।
- इच्छावाकु के पुत्र दण्डक के नाम पर दण्डकारण्यक वन (घने जंगल) का नाम पडा था । दण्डकारण्यक के वनों का उल्लेख रामायण से मिलता है ।

- दण्डकारण्यक (बस्तर) वर्तमान में छत्तीसगढ में है ।
- विध्य प्रदेश व सतपुडा के क्षेत्रों पर रामायण काल में निषाद जातियों का अधिकार था ।
- महाभारत काल में उज्जैन सांदीपनि आश्रम के लिए प्रसिद्ध था ।
- महाजनपद काल छटी शताब्दी ई.पू. में बौद्ध ग्रंथ अगुत्तर निकाय एवं जैन ग्रंथ भगवती सूक्त में 16 महाजनपदों का वर्णन मिलता है ।
- महाजनपद में वत्स ग्वालियर, चेदि, खजुराहो का सम्बंध मध्य प्रदेश से है ।
- महाजनपद काल में चार शक्तिशाली जनपदों में दूसरे स्थान पर अवन्ति जनपद था, जिसका संबंध आधुनिक उज्जैन से है । जिसकी दो राजधानिया थी उत्तर में उज्जैनी तथा दक्षिण में महिष्मति ।
- अवन्ति का शासक प्रद्योत था । जो कि बुद्ध का समकालीन था । प्रद्योत के निमंत्रण पर बुद्ध अपने शिष्य महाकच्चायन को भेजते है । जोकि उज्जैयनी के रहने वाले थे ।

<u>लौहयुगीन संस्कृति (1000 ठण्ब् से प्रारंभ)</u>
म.प्र. के भिण्ड, मुरैना श्योपुर, ग्वालियर क्षेत्र से साक्ष्य

<u>वैदिक युग (1500–600 ई.पू) :</u>
वस्तुतः ऋग्वैदिक काल (1500–1000 ई.पू.) में आर्य संस्कृति उत्तर तक सीमित थी और उत्तर वैदिक (1000–600 ई.पू.) समय में ही उसने विंध्याचल को पार कर म.प्र. में कदम रखा ऐतरेय ब्राम्हण में जस निषाद जाति का उल्लेख है, वह मध्यप्रदेश के जंगल में निवास करती थी । ऋग्वेद में 'दक्षिणापथ और रेवोत्तर' शब्द आये है । 'एतरेय ब्राहण' 'सांख्यायन श्रोतसूत्र' एवं शतपथ ब्राहण ग्रन्थों के अनुसार विश्वामित्र के पचास शापित पुत्र मालवा आकर बसे, तत्पश्चात् अत्रि पाराशर, भारद्वाज, भार्गव आदि भी आए । पौराणिक कथाओं के अनुसार कारकोट नागवंशी शासक नर्मदा क्षेत्र के शासक थे । उस समय नर्मदा का नाम रेवा था । मौनेय गंधर्वो से जब उनका संघर्ष हुआ तो अयोध्या के इक्ष्वाकु नरेश मांधाता ने अपनु पुत्र पुरूकुत्स को नागों की सहायतार्थ भेजा जिसने गंधर्वों को पराजित किया । पुरूकुत्स ने ही रेवा का नाम नर्मदा कर दिया । इसी वंश के मुचुकुन्द ने रिक्ष और परियात्र पर्वतमालाओं के बीच नर्मदा के तट पर अपने पूर्वज नरेश मांधता के नाम पर मांधाता नगरी (ओंकारेश्वर मांधाता) की स्थापना की ।

अनुश्रुति पर आधारित इतिहास : अधिकांशतया पुराणों और कुछ हद तक महाकाव्यों से इन अनुश्रुतियों का सम्बन्ध है ।

कारूष वंश : अनुश्रुति अनुसार मनुष्यों की परम्परा में अंतिम मनु ''वैवस्वत'' (जिनके समय विश्व व्यापक बाढ आयी थी) हुऐ, जिनके 10 पुत्र थे । इनमें से एक पुत्र ''कारूष'' के नाम पर कारूष वंश ने ''कारूष'' देश (वर्तमान बघेलखण्ड) पर शासन किया ।

चन्द्रवंश (ऐल साम्राज्य) : मनु वैवस्वत की पुत्री इला का विवाह सोम (चन्द्र) से हुआ था । इनके राज्य का नाम ''ऐल साम्राज्य'' हुआ जिसका आदि पुरूष सोम (पुरूरूवा) ही था । सोम या चन्द्रवंश के साम्राज्य का विस्तार बुन्देलखण्ड तक था । सोम (पुरूरूवा) के पुत्र आयु और अमावसु हुए ।

ययाति और एल राज्य का विभाजन : राजा आयु की तीसरी पीढी में चन्द्रवंशी ययाति हुआ जिसने देवयानी (शुक्र भार्गव ऋषि की कन्या) से विवाह किया । ययाति ने अपना एल साम्राज्य पांचो पुत्रों में बांट दिया । इस विभाजन में यदु को चर्मणवती (चम्बल), नेत्रवती (बेतवा) और शुक्तिमती (केन) का घाटी क्षेत्र प्राप्त हुआ और उसके नाम पर यदु या याद वंश की स्थापना हुई । दनतवक्र नमक दैतय के नाम पर 'दतिया' राज्य हुआ । श्रीकृष्ण द्वारा वास्त दन्तवक्र

'गोपालकक्ष' हो गये और ग्वालियर की पहाडियों पर आ बसे इससे यह क्षेत्र गोपाल गिरी (ग्वालियर का पूर्व नाम) हो गया ।

इक्ष्वाकु वंश और दण्डकारण्य राज्य : मनु के एक पुत्र इक्ष्वाक के नाम पर इक्ष्वाकु वंश की स्थापना हुई, जिसके पुत्र ने दण्डकारण्य (बस्तर) राज्य स्थापित किया ।

<u>मान्धाता चक्रवर्ती</u> : इक्ष्वाकु वंश का प्रतापी राजा मान्धाता हुआ, जो चक्रवर्ती सम्राट था । इसके एक पुत्र पुरूकुत्सु ने मध्यभारत के नाग राजाओं को गंधर्वों के खिलाफ सहायता दी । तथा रेवा का नाम नर्मदा कर दिया ।

<u>हैहय साम्राज्य</u> : यादव वंश के संस्थापक यदु के पौत्र हैहय के नाम पर स्थापित हैहय राज्य के राजा महिष्मन्त ने एक जीते गए दुर्ग का नाम महिष्मति (महेश्वर) रखा

। इसके वंशज कृतवीर्य ने हैहय वंश के विशाल साम्राज्य को स्थापित किया ।

सहस्त्रार्जुन : हैहय वंश में ही कार्तवीय या अर्जुन या सहस्त्रार्जुन (सहस्त्रबाहू) नामक महान सम्राट हुआ, जिसकी हजार भुजाएं मानी गयी । उसने समस्त पृथ्वी को जीता और अनेक यज्ञ किए । उसने लंका के राजा रावण को भी हराया ।

राजा अवंति : अर्जुन के पुत्र जयध्वज ने अवंति (मालवा) पर राज्य किया । अवंति नाम जयध्वज के पोत्र अवंति नामक राजा के नाम पर बाद में पडा । अवंति ने ही यादवों को विदिशा से भगाया था ।

महाजनपद युग

वैदिक काल के अंतिम समय अर्थात 600 ई.पू. के लगभग भारत में 16 महाजनपद थे, अतएव इस काल को महाजनपद काल कहा जाता हैं । इनमें से दो महाजनपद–चेदि (बुंदेलखण्ड) और अवंति (उज्जैन) वर्तमान मध्यप्रदेश के क्षेत्रान्तर्गत ।

चेदि जनपद : वर्तमान बुन्देलखण्ड क्षेत्र के पूर्व में विस्तारित था । इसकी राजधानी शक्तिमति थी । इसकी एक शाखा कलिंग में स्थापित हुई । खारवेल वहाँ का प्रसिद्ध शासक हुआ । चेदिवंश के राजा शिशुपाल का महाभारत में वर्णन हुआ हैं । इसका सिर कृष्ण ने अपने चक्र से काटा था । चेदि बाद में कमजोर पडा और मगध ने इसे अपने साम्राज्य में मिला लिया ।

अवंति : मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग में एक सशक्त महाजनपद था । अवंती को बौद्ध ग्रन्थें में अच्युतगामिनी भी कहा गया हैं । इसके दो भाग थे ।
1. उत्तरी अवंति जनपद, जिसकी राजधानी उज्जैयिनी थी तथा
2. दक्षिणी जनपद जिसकी राजधानी महिष्मति (महेश्वर) थी ।

दोनों को पृथक् करती बेतवा (वेत्रावती) नदी प्रवाहित होती थी । अवंति के दो प्रसिद्ध नगर कुररघर और सुदर्शनपुर का वर्णन अंततः मगध में मिला लिया । उस समय यहाँ का शासक नदिवर्धन था ।

त्यौथर (रीवा) : बौद्धकालीन स्तूप के खण्डहर यहा से मिले हैं ।

नन्द वंश : मगध में नन्दवंशी राजा महापद्मनन्द ने साम्राज्य विस्तार की अपनी नीति के तहत चेदी को मगध राज्य में मिला लिया था । बडवानी से नन्दवंश की मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं ।

मौर्य युग : मौर्यों के समय भी अवंति, चेदि मगध के भाग बन रहे । सम्राट बिन्दुसार ने अपने पुत्र अशोक को अवंति का प्रांत पति बनाया गया, जिसने विदिशा की शाक्यवंशी श्री देवी या महादेवी (वैश्य की बेटी) से विवाह किया । इससे ही महेन्द्र और संघमित्रा उत्पन्न हुए । इसी अशोक ने सम्राट बनने के उपरान्त सांची के प्रसिद्ध स्तूप का निर्माण कराया । संभवतः महादेवी के लिए भी एक स्तूप उज्जैन में अशोक ने बनवाया था, जिसे आज "वैश्य टेकरी" के नाम से जाना जाता हैं । अशोक के लघु शिलालेख (म.प्र.) रूपनाथ (जबलपुर), अशोक का नामवाला गुर्जरा (दतिया), सारो मारो (सीहोर), पानगुराडिया (सीहोर), सांची (रायसेन) में मिलते हैं । गुर्जरा लेख में अशोक देवनामप्रिय, प्रियादस्सी का उल्लेख हैं ।

मौर्यकालीन स्तूप

- साँची का स्तूप : सम्राट अशोक ने तीसरी शताब्दी ई.पू. में साँची के बौद्ध स्तूप का निर्माण करवाया था, जो मूल रूप से ईंटों से निर्मित था । 1818 ई. में जनरल टेलर ने साँची स्तूप को खोजा ।
- तुमैन का स्तूप : तुमैन (जिला, गुना) विदिशा तथा मथुरा को जोडने वाले प्रमुख व्यापारिक मार्ग का स्थित हैं । यहाँ से तीन मौर्यकालीन बौद्ध स्तूपों के अवशेष मिले ।
- उज्जैन का बौद्ध महास्तूप : सम्राट अशोक द्वारा अपनी पत्नी कुमार देवी के लिए उज्जैन में एक विशाल स्तूप का निर्माण करवाया गया था, जिसके अवशेष वैश्य टेकरी (कानीपुरा) नामक टील के रूप में विद्यमान हैं ।
- करसावद के स्तूप : करसावद (जिला खरगौन) में स्थित इतबर्डी नामक टीले के उत्खनन से 11 मौर्यकालीन स्तूप प्राप्त हुए हैं ।
- देउकोठार के स्तूप : देउरकोठार (जिला रीवा) में मौर्यकालीन बौद्ध स्तूप प्राप्त हुए हैं ।
- पनगुडारिया का स्तूप : पनगुडारिया (सीहोर) से भी मौर्यकालीन प्रदक्षिणापथ युक्त स्तूप प्राप्त हुआ हैं ।

- साँची (काकनादबोट) : 1818 ई. में सर्वप्रथम जनरल टेलर ने यहाँ के स्मारकों की खोज की थी 1818 ई. में मेजर कोल ने स्तूप संख्या 1 को भरवाने के साथ उसके द.प. तोरण द्वारों तथा स्तूप के तीन गिरे हुए तोरणों को पुनः खडा करवाया । इस प्रकार यहाँ तीन स्तूप हैं । इनमें एक विशाल तथा दो लघु स्तुप हैं ।

मौर्योत्तर युग (200 ई.पू. – 150 ई.)

नगरीय युग : मौर्यो के समय अनेक नगर विकसित हुए थे, इनमें एरण, त्रिपुरी, महिष्मती, भागिल, विदिशा, अवंति (उज्जैयिनी) एवं पद्मावती प्रमुख हैं । इस समय के आहत सिक्के (पंचमार्क) हमें उपलब्ध हुए हैं । इन सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि में लेख हैं ।

शुंग काल (187–75 ई.पू.) : शुंग मूलतः उज्जैन के थे और यहाँ मौर्यो की सेवा में रहे । मौर्यो के बाद शुंग वंश ने मगध पर राज किया । इसकी स्थापना पुण्यमित्र शुंग ने अंतिम मौर्य राजा वृहदथ की हत्या करके की । उसका पुत्र अग्निमित्र विदिशा का प्रांतपति था ।

भरहुत : शुंग द्वारा ही सतना जिले में एक विशाल स्तूप का निर्माण हुआ था । सिके अवशेष में से उसकी वेष्टिनी का एक भाग तथा तोरण भारतीय संग्रहाल कोलकाता तथा प्रयाग संग्रहालय में सुरक्षित हैं । 1875 ई. में कनिंघम द्वारा जिस समय इसकी खोज की गई थी उस समय तक इसका केवल 10 फुट लम्बा और 6 फुट चौडा भाग ही शेष रह गया था ।

सातवाहन वंश (50 ई.पू. – 300 ईसवी)
दक्षिण भारतीय शक्ति सातवाहनों ने कण्वों का अंत किया, लेकिन वे उत्तर के बजाय दक्षिण (महाराष्ट्र) केन्द्र से ही शासन करते रहे । इसके पराक्रमी राजा शातकर्णी की पूर्वी मालवा विजय का उल्लेख सांची में उत्कीर्ण एक लेख से होता है । उसके यहा मिले सिक्कों पर ''सिरिसात'' (शातकर्णी) उत्कीर्ण हैं । सबसे महान सातवाहन राजा गौतमीपुत्र शातकर्णी (106–130 ईसवी) के सिक्के अधिक संख्या में उज्जैन आदि से मिले हैं ।

शक राज्य (50 बी.सी. – 300 ईसवी)
पश्चिम भारत में यूनानी राज्य के स्थान पर शक राज्य स्थापित हुआ । पश्चिमी चीन से भारत आने वाली शक जाति ने अपने नासिक, उज्जैन, मथुरा, पंजाब में अपने क्षत्रप राज्य स्थापित किए । मध्यप्रदेश के सन्दर्भ में नासिक और उज्जैन के शक राज्य ही महत्वपूर्ण हैं, जहाँ क्रमशः शहरात और कार्द्दमक वंश के शक राज्य थे ।

मालव जाति (600 ठब – 200।क)
सिकंदर पर आक्रमण से प्रकाश में आयी मालव जाति कालांतर में मालवा में आकर बस गयी । यही उसने शासन स्थापित किया । संभवतः मालव जाति के नाम पर ही मालवा नाम पडा । पाणिनी ने अपने संस्कृत व्याकरण अष्टाध्यायी में मालव जाति का उल्लेख आयुधाजीवी के रूप में किया ।

नागवंश
मथुरा के नागवंश की एक शाखा ने म.प्र. में शासन स्थापित किया । इसके संस्थापक वृषनाथ का सिक्का विदिशा से मिला हैं । वृषनाथ की राजधानी विदिशा थी, जिसे भीमनाग पद्मावती ले गया । समुद्रगुप्त ने अंमि नाग राजा गणति नाग को परास्त कर उसका राज्य गुप्त साम्राज्य में मिला लिया था । चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने मथुरा के नागवंश की राजकुमारी कुबेर नागा से विवाह किया था ।

गुप्तकाल
गुप्तों के समय एक बार फिर भारत का राजनीतिक एकीकरण हुआ । मध्यप्रदेश में उनके प्रतापी राजाओं की उपस्थिति और अभियान इस क्षेत्र के राजनीतिक महत्व को स्थापित करती है
जब गुप्तों का पाटलिपुत्र में उदय हो रहा था तब मध्यप्रदेश में अनेक क्षेत्रीय शक्तियाँ थी जैसे पश्चिमी मध्यप्रदेश में शक एक
चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नवरत्न
1. कालीदास
2. बेतालभट्ट,
3. वराहमिहिर
4. धन्वतंरी,
5. अमरसिंह,
6. वररूचि
7. घटकर्पर
8. क्षणपक
9. शुक

अत्यंत मजबूत राज्य था । मध्यप्रदेश में आभीर, नागवंश जैसे राज्य भी शक्तिशाली थें ।

एरण (सागर) समुद्रगुप्त का स्वभोग नगर बन गया था इस प्रकार समुद्रगुप्त शक राज्य को छोडकर शेष

मध्यप्रदेश पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर चुका था। उसके सिक्के यहाँ से मिले हैं। ''कांच'' नामक सिक्के भी गुप्तों की अधिपत्यता की पुष्टि करते हैं जो विदिश से मिले हैं।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने शक राज्य (उज्जैयिनी के कार्दमक वंश) का अंत कर लगभग सम्पूर्ण मध्यप्रदेश को अपने अधीन कर लिया। उसकी शक विजय ''देवीचन्द्रगुप्तम'' से और उसकी ''शकारी'' उपाधि से पता चलती है। सांची अभिलेख भी उसके एक दीर्घकालीन अभियान की पुष्टि करता है। ''देवीचन्द्रगुप्तम'' के अनुसार रामगुप्त नामक गुप्त राजा ने शक राजा से परास्त होकर अपनी पत्नी ध्रुव देवी को उसे सौंपना स्वीकार कर लिया था लेकिन उसके स्वाभिमानी भाई चन्द्रगुप्त ने शक को मारकर ध्रुवस्वामिनी को मुक्ति दिलाई और रामगुप्त का वध कर गुप्त सम्राट बना। चन्द्रगुप्त ने उज्जैयिनी को अपनी दूसरी राजधानी बनाया और यही उसके दरबार में नवरत्न होते थे। उसके उत्तराधिकारी कुमारगुप्त की मन्दसौर प्रशस्ति के अनुसार उसके सामन्त बंधुवर्मा ने सूर्य मंदिर को दान दिया था। स्कंदगुप्त के समय सफेद हुणों ;भ्मंचर्जीस्पजमेद्ध आक्रमण का फायदा उठाकर वाकाटकों ने मालवा पर अधिकार कर लिया था लेकिन स्कन्दगुप्त ने उसे पुनः छिन लिया।

स्थान
महादेव पिपरिया (नर्मदा घाटी)
हथनोरा (नर्मदा घाटी, जिला सिहोर)
मंदसौर (चम्बल घाटी)
भीम बैटका (नर्मदा घाटी)
आदमगढ श्रैलाश्रय (होशंगाबाद)
प्रमुख स्थल और खोजकर्ता

महत्वपूर्ण सामग्री
860 औजार
नर्मदेवसिस मानव की खोपडी ब्लेडस
ब्लेड उपकरण, शैलाश्रय
25 हजार लघु पाषाण उपकरण
खोजकर्ता विद्वान
सुपेकर
एच.डी. सांकलिया, मैक ब्राउन, अरूण सोनकिया
प्रो. वाकणकर
बी.बी. मिश्रा
द्वार बी. जोशी

प्राचीन नगरों के नवीन नाम

प्राचीन नाम	वर्तमान नाम
विराटपुरी	सोहागपुर
महिष्मती	महेश्वर
इन्द्रपुट (इन्द्रप्रस्थ)	इन्दौर
कुंतलपुर	कोंडिया
उज्जैयिनी	उज्जैन
भोजताल	भोपाल
धारा नगरी	धार
भथा (भरहूत)	रीवा
अंचहरा	सतना

- भारत में मानव उपस्थिति का प्रथम साक्ष्य हथनौरा (जिला सिहोर), नर्मदा घाटी से प्राप्त (5 लाख से 2.5 लाख वर्ष पूर्व के मध्य)
- खोजकर्ता : अरूण सोनकिया (1982 में) तथा अन्य
- हथनौरा (जिला सिहोर) होशंगाबाद से 20 किमी. दूर स्थित है।

- भारत में मानव उपस्थिति का प्रथम साक्ष्य हथनौरा (जिला सिहोर), नर्मदा घाटी से प्राप्त (5 लाख से 2.5 लाख वर्ष पूर्व के मध्य)
- खोजकर्ता : अरूण सोनकिया (1982 में) तथा अन्य
- हथनौरा (जिला सिहोर) होशंगाबाद से 20 किमी. दूर स्थित है।

प्राचीन जनपद	नवीन नाम
अवन्ति (अवंतिका)	उज्जैन
वत्स	ग्वालियर
चेदि	खजुराहो
अनूप	निमाड (खण्डवा)
दशार्ण	विदिशा
तुंडीकेर	दमोह
नलपूर	नरवर (शिवपुरी)

मध्यप्रदेश के अन्य राजवंश

वाकाटक वंश : विंध्यशक्ति द्वारा स्थापित वाकाटक राज्य मूलतः मध्यप्रदेश का राजवंश था, जो बाद में नर्मदा के दक्षिण में केन्द्रीत हो गया। विध्यशक्ति का पुराणों में विदिशा का शासक बताया गया है। उसके पुत्र प्रवरसेन अश्वमेघ यज्ञ किया और नागवंश से वैवाहिक संबंध स्थापित किये।

औलिकर वंश : प्राचीन दशपुर (मन्दसौर) में 4थी सदी ईसवी में आंलिकर वंश की सत्ता स्थापित हुई। इनकी राजधानी दशपुर थी। जयवर्मन, सिहंवर्मन, नरवर्मन इसके प्रारंभिक शासक थे। एक शासक ''बंधुवर्मन'' का प्रसिद्ध

शिलालेख मन्दसौर में हैं, जिसके अनुसार बंधुवर्मन स्कन्दगुप्त का सामन्त बन गया था ।

आभिर वंश : दक्षिण के सातवाहनों के सामन्त रहे आभिरों ने ईश्वरसेन के नेतृत्व में अनुपप्रदेश (निमाड) में राज्य स्थापित कर लिया । इसका विस्तार मालवा तक किया किंतु शीघ्र ही मालवा वाकटाकें ने छिन लिया

परिव्राजक वंश या उत्कल वंश : पन्ना में स्थापित परिव्राजक वंश की सत्ता पूंरे बुन्देलखण्ड तक व्याप्त थी इसका पहला राजा देवादय था । प्रभंजन, दामोदर और हस्तिन उसके उत्तराधिकारी हुए, जिनमें हस्तिन प्रतापी राजा था । खोह और मझगंवा तामपत्र हस्तिन से संबंधित हैं । इनकी राजधानी उच्च कल्प (सतना में वर्तमान ऊँचहेरा) थी ।

नल वंश (400–1100 ई.) : बस्तर – कोशपुट क्षेत्र में स्थापित नलवंश का पहला राजा वराहराज था लेकिन इसका वास्तविक संस्थापक था – भावदत्त वर्मा । वराह राज की 29 स्वर्ण मुद्राये 'एडेंगा' (कोण्डागाव तहसील) से मिली हैं । भवदत्त वर्मा के बारे में जानकारी ऋशिपुर (अमरावती) ताम्रपत्र और पोडगढ शिलालेख से होती हैं

शुरभपुरीय वंश : लगभग 5वीं सदी ईस्वी के अंत में दक्षिण कोसल में एक नये राजवंश की स्थापना हुई । भानुगुप्त के एरण स्तंभ लेख (गुप्त संवत् 191 अथवा 510 ई.) में शरभराज का उल्लेख हैं, जो संभवतः शरभपुरीय वंश का संस्थापक था ।
शरभ का उत्तराधिकारी नरेन्द्र था । इसके तीन ताम्रपत्र प्राप्त हुये हैं । इसके पश्चात् प्रसन्नमात्र नामक एक शक्तिशाली राजा हुआ । परवर्ती अभिलेखों में वंशावली इसी नरेश से प्रारंभ की गई हैं । इसने अपने नाम से प्रसन्नपुर नामक नगर की स्थापना की थी, जो निडिला नदी के किनारे स्थित था ।

वल्लभी का मैत्रक वंश : छठी सदी ई. के मध्य में जब गुप्त शासकों की सत्ता पतन गामी हुइ तो, इसके पूर्व मैत्रकों ने अपने अभिलेखों में गुप्त अधीनता का उल्लेख करना बन्द कर दिया और (इनसे स्वतन्त्र होकर मैत्रक वंशी शासकों ने अपने साम्राज्य का विस्तार करना आरम्भ कर दिया ।) चीनी यात्रा हवेनसांग बताता है कि मैत्रक वंशी शासक महाराज शिलादित्य प्रथम (धर्मादित्य) वल्लभी में राज्य कर रहा था ।

मेकल का पाण्ड वंश : वर्तमान अनूपपुर जिले में स्थित अमरकंटक तथा उसके आसपास का क्षेत्र कभी मेकल कहलाता था । मेकल के पाण्डव वंश की जानकारी राजा नागबल के बसनी ताम्रलेख से होती हैं । इस अभिलेख में वंश का सर्वप्रथम राजा जयबल था, फिर उसका पुत्र वत्सराज था, फिर उसका पुत्र महाराज नागबल हुआ ।

वर्धनवंश (पुष्पभूति वंश) : हर्षवर्धन (606–143 ई.) के समय म.प्र. का कुछ भाग उसकी अधीन तब आया था, ज बवह अपनी बहन राज्यश्री को खोजने यहाँ आया था । हर्षवर्द्धन के शासनकाल में चीनी यात्री हवेनसांग भारत भ्रमण पर आया था ।

राष्ट्रकुट वंश : मूलतः मान्यखेत (महाराष्ट्र) में स्थापित राष्ट्रकुट वंश की एक शाखा 9वी शति में बैतूल क्षेत्र में भी शासन कर रही थी । इनके एक राजा युहासुर के ताम्रपत्र तिसरखेडी और मूलताई से मिले हैं । मान्यखेत के राजा गोविन्द तृतीय ने नागभट्ट को परास्त कर उज्जैन में दरबार लगाया था ।

गुर्जर प्रतिहार वंश : मूलतः जोधपुर-मेडता (राजस्थान) में हरिशचन्द्र द्वारा स्थापित गुर्जर प्रतिहार वंश की एक शाखा नागभट्ट प्रथम (730–756 ई.) के समय उज्जैयिनी में स्थापित हुई । इसने अरबों के आक्रमण को विफल किया । इसके एक उत्तराधिकारी वत्सराज ने राज्य विस्तार किया, जिससे राष्ट्रकूट – पाल – प्रतिहार के मध्य त्रिपक्षीय संघर्ष शुरू हुआ । नागभट्ट द्वितीय ने अन्ततः कन्नौज पर अधिकार कर त्रिपक्षीय संघर्ष में प्रतिहारों को विजय बनाया ।

राजा धंग (954–1002 ई.) : यशोवर्मन का पुत्र और उत्तराधिकारी धंग चन्देल – शासकों में सबसे महान् हुआ उसने कुछ समय पश्चात् अपने को प्रतिहारों की अधीनता से मुक्त घोषित कर दिया और उनके पूर्वी राज्य पर अधिकार कर लिया । कालिंजर पर अपना अधिकार सुदृढ कर उसे अपनी राजधानी बनाया । इसके बाद ग्वालियर पर अपना अधिकार जमाया । उसने पाल-शासकों से बनारस को छीन लिया तथा कुन्तल, कोसल और आन्ध्र के शासकों से युद्ध किये । उसने हिन्दुशाही – शासक जयपाल को सुबुक्तगीन के विरूद्ध सहायता भेजी ।

राजा गंड (1002–1017 ई.) – धंग का पुत्र गंड भी एक योग्य शासक हुआ । इसने अपने पुत्र विद्याधर के द्वारा कन्नौज के भगोडे प्रतिहार शासक राज्यपाल (महमूद गजनवी के विरूद्ध वह भाग खडा हुआ था ।) का वध

कराया । गंड ने अपने शासनकाल के समय खजुराहों में जगदम्बी नामक वैष्णव मंदिर तथा चित्रगुप्त नामक सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया था ।

विद्याधर (1017–1029 ई.) – यही एक ऐसा भारतीय शासक था जिसने महमूद गजनवी की महत्वाकांक्षाओं का सफलतापूर्वक विरोध किया । इसने मालवा परमार के शासक भोज व त्रिपुरी के कलचुरि शासक गांगेयदेव को भी हराकर उसे अपने अधीन कर लिया । विद्याधर ने न सिर्फ महमूद गजनवी से अपने राज्य की सुरक्षा की, अपितु उसके विरूद्ध हिन्दू संघ को सहायता भी दी । इस संघ से भाग आए प्रतिहार राजा राज्यपाल की उसने हत्या की कन्दरिया महादेव (खजुराहों) मंदिर उसके काल में बना महमूद गजनवी ने संधि उपरान्त विद्याधर की मित्र बनाकर 15 किले इनाम में दिये ।

कीर्तिवर्मन (ई. 1060–1100) : कृष्णा मित्र द्वारा रचित प्रबेधचन्द्रोदय नामक नाटक से ज्ञात होता है कि उसने चंदेल शक्ति का पुनरूत्थान किया । कीर्तिवर्मन ने सोने के सिक्के भी चलवाये ।

मदनवर्मन (1129 ई. – 1163 ई.) : मदनवर्मन एक पराक्रमी शासक के रूप में बैठा । मालवा में विदिशा के समीप चंदेलों के पुनः आधिपत्य की पुष्टि विदिशा अभिलेख से होती है । इसमें यह उल्लेख है कि, मदनवर्मन राहुल शर्मा नामक ब्राह्मण को 10 हल भूमि दान में दी थी । रीवा जिले के त्योंथर तहसील के पनवार ग्राम में मदनवर्मन द्वारा जारी चाँदी के 48 सिक्के प्राप्त हुए है ।

परिमार्दिदेव (ई. 1165–1200) : मदनवर्मन का उत्तराधिकारी उसका पोता परिमार्दिदेव हुआ । परमार्दीदेव (परिमल) अंतिम स्वतन्त्र चन्देल राजा था, जिसे पहले पृथ्वीराज चौहान ने हराया और अंततः कुतुबुद्दीन ऐबक ने उसे मारकर चन्देल राज्य और कालिंजर दुर्ग पर कब्जा कर लिया । आल्हा – उदल परमार्दीदेव के साले और योद्धा थे ।

त्रैलोक्यवर्मन (ई. 1203–1250) : अपने पिता परिमार्दिदेव का उत्तराधिकारी हुआ । उसने तुर्कों को पराजित कर कालिंजर को पुनः जीता, रीवा को जीता तथा डाहल मण्डल (बघेलखण्ड) के एक भाग पर अधिकार कर लिया ।

राजा भोज (1010 ई. से 1060 ई.) : सिंधुराज का पुत्र भोज इस वंश का योग्य एवं प्रतापी शासक था उसने आरंभ में चेदि (कलचुरी), गुजरात, लाट, कर्णाट आदि राजाओं को परास्त किया, किंतु बाद में सोलंकियों और कलचुरियों ने सम्मिलित आक्रमण कर उनकी नवनिर्मित राजधानी धारा (पूर्व में उज्जयिनी थी जिसे धारा भोज लाया) को लूटा । भोज ने आरा के पास भोजपुर नाक नगर बसाया । भोज ने हिन्दुशाही – शासक आनन्दपाल को महमूद गजनवी के विरूद्ध सहायता दी और उसकी पुत्र त्रिलोचनपाल को अपने यहाँ शरण दी 1043 ई. में उसने अन्य राजूपत शासकों के साथ मिलकर हाँसी, थानेश्वर, नगरकोट आदि स्थानों को मुसलमानों से छीनने में सफलता पायी ।

कलचुरी वंश (550–1740 ई.) : पहले माहिष्मति (महेश्वर) में स्थापित कलचुरियों ने अधिकांश समय त्रिपुरी (जबलपुर) में शासन किया । कृष्णराज माहिष्मति का पहला ज्ञात शासक हैं । इसके बाद शंकरगण एवं बुद्ध राज हुए । बुद्धराज को चालुक्य राजा मंगलेश ने मार भगाया और कलचुरी त्रिपुरी में आ बसे ।

त्रिपुरी (तेवर, जबलपुर) में कलचुरी वंश का संस्थापक वामराजदेव था । इसके राज्य को चेदी राज्य कहा गया

गुहिलवंश (1000–1050 ई.) : जीरण (मंदसौर) अभिलेख से मन्दसौर में गुहिल वंश के शासन की पुष्टि होती है । विग्रह पाल इसका पहला ज्ञात शासक है ।

देवगिरि का यादव वंश : 11वीं एवं 12वीं शताब्दी ई. के मध्य देवगिरि (औरंगाबाद जिले में स्थित आधुनिक दौलताबाद) के यादव शासकों ने अपने साम्राज्य का विस्तार कर विदर्भ के अधिकांश भाग पर आधिपत्य स्थापित कर लिया । देवगिरि के यादव वंश के महान

कच्छापघाट वंश : अभिलेखों से कच्छापघाट राजवंश की तीन शाखाओं का पता चलता है, जो ग्वालियर, दुबकुण्ड तथा नरवर में राज्य कर रही थी ।

ग्वालियर शाखा : ग्वालियर के सास-बहू मंदिर में दो प्रस्तरों पर उत्कीर्ण तथा ग्वालियर से प्राप्त तीसरे खण्डित अभिलेखों में इस वंश की वंशावली तथा उपलब्धियों का वर्णन है । इस वंश के प्रथम नरेश लक्ष्मण के उत्तराधिकारी वज्रदामन ने कन्नौज नरेश को पराजित कर ग्वालियर में अपना राज्य स्थापित किया । वज्रदामन का उत्तराधिकारी मंगलराज तथा उसका उत्तराधिकारी कीर्तिराज राजा हुआ ।

सन् 1021 ई. में ग्वालियर पर गजनी के महमूद का आक्रमण हुआ जिसमें ग्वालियर नरेश ने आत्मसमर्पण कर दिया । कीर्तिराज के पश्चात् क्रमशः मूलदेव, महीपाल, भुवनपाल तथा मधुसूदन हुए ।

अंतिम नरेश मधुसूदन के बाद इस वंश के इतिहास का कुछ भी पता नहीं है ।

दुबकुण्ड शाखा : ग्वालियर में 76 मील दक्षिण – पश्चिम में स्थित दुबकुण्ड (प्राचीन चंडोभ) में दुबकुण्ड शाखा राज्य करती थी । दुबकुण्ड अभिलेख से ज्ञात होता है कि इस वंश में अर्जुन, उसका पुत्र अभिमन्यु, अभिमन्यु का पुत्र विजयपाल तथा विजयपाल का पुत्र विक्रमसिंह हुए हैं

नरवर शाखा : कच्छपघाट राजवंश की नरवर शाखा (प्राचीन नलपुर) में राज्य करती थी । नरवर से प्राप्त ताम्रपत्र में गगनसिंह, शरद सिंह और वीर सिंह नरेश के राज्य करने का पता चलता है ।

तोमर वंश : मुस्लिम सत्ता के डांवाडोल होने पर वीर सिंह देव ने ग्वालियर में तोमर राज्य की नींव डाली । इसके एक राजा डुंगरेन्द्र सिंह ने जैन धर्म को राजकीय संरक्षण दिया । इसकी का वंशज मानसिंह मृगनयनी से प्रेम के कारण चर्चित है । इसे लोदी शासको से निरन्तर संघर्ष करना पडा । इसके पुत्र विक्रमादित्य ने इब्राहिम लोदी की तरफ से पानीपत के प्रथम युद्ध में भाग लिया था । विक्रमादित्य से ही इब्राहिम लोदी ने ग्वालियर का किला छिना था ।

मध्यप्रदेश के प्रमुख अभिलेख

मुन्नसौर अभिलेख : विक्रम संवत् 529 (473 ई.) का यह लेख प्रशांत के रूप में है जिसकी रचना संस्कृत विद्वान वत्सभट्टि ने की थी । इसमें यहा के राज्यपाल बन्धुवर्मा का उल्लेख मिलता है, जिसने सूर्य मन्दिर के निर्माण हेतु तंतुवाय श्रेणी को दान दिया । मन्दसौर का नाम दशपुर भी था ।

मध्यकालीन इतिहास

सल्तनत के अधीन मध्यप्रदेश

- भारत में मुहम्मद गौरी ने इस्लामिक राज्य की स्थापना की लेकिन सल्तनत का प्रारंभ एबक से शुरू होता है, जो दासवंश का प्रारंभकर्ता भी था
- एबक (1206–1210) ने ही पहले गौरी के भारतीय प्रतिनिधि के रूप में और बाद में सल्तनत के पहले शासक के रूप में भारतीय राज्यों को जीता । म.प्र. में भी गोरी और एबक ने हमले बोले । गौरी ने ग्वालियर के लोहंगदेव (सल्लक्षण) को हराया था । एबक ने अंतिम चंदेल राजा परिमल देव को हराकर कालिंजर जीता (1202 ई.) ।
- इल्तुतमिश (1210–1236) में मांडू, ग्वालियर और मालवा की विजय की तथा उज्जैन में महाकालेश्वर मंदिर लूटा ।
- खिलजी वंश के संस्थापक जलालुद्दीन खिलजी (1290–1296) ने मांडू को लूटा था । उसने ग्वालियर में एक गुबंद आकार का विश्राम गृह निर्मित किया था
- अलाउद्दीन खिलजी ने मानिकपुर के हाकिम के रूप में उज्जैन और विदिशा के मंदिरों को लूटा था । सुल्तान (1296–1216) बनने के बाद भी उसने कालिंजर, भिलसा, चंदेरी, धार, मांडू जैसे नगरों को लूटा । 1305 में उसने मालवा के शासक मल्हकदेव को अपने सेनापति एन उल मुल्क के माध्यम से हराया ।
- तुगलक वंश के संस्थापक गियासुद्दीन तुगलक (1320–1325) के प्रांतपति ने दमोह में एक महल बनवाया था, जिसका उल्लेख बटियागढ शिलालेख में है । राजकुमार जूनाखां (मुहम्मद तुगलक) ने इसी समय चंदेरी और मालवा पर पूर्ण आधिपत्य स्थापित किया ।
- मुहम्मद तुगलक ;1325–1351द्ध ने बाटियागढ में प्राणियों के लिए गो–मठ, बावडी और बगीचा बनवाया (संस्कृत अभिलेख) ।
- फिरोज तुगलक (1351–1389) का जिक्र दुलनीपुर (सागर) अभिलेख में, लोदीवंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी (1506–1526) के समय मालवा में महमूद खिलजी द्वितीय ने स्वतन्त्र सत्ता स्थापित थी, लेकिन उस पर प्रभाव प्रधानमंत्री मेदिनीराय का था, जो राणा सांगा के अधीन चंदेरी का शासक भी था
- तोमर राजवंश (14वीं – 16वीं सदी) : तोमर राजपूत काल में भी स्थानीय शक्ति थे । बाद में नका पतन

हो गया था । तोमर वंश का संस्थापक वीरसिंहदेव था । इसने तैमूर आक्रमण लाभ लेकर अपनी सतत स्थापित की । वीरसिंहदेव के उत्तराधिकारी क्रमशः उद्धरदेव तथा विक्रमदेव हुए । विक्रमदेव के राज्यकाल में 1402 ई. में नासिरूद्दीन मोहम्मद तुगलक के सेनापति मल्लु इकबाल खाँ ने ग्वालियर पर आक्रमण कर किले को जीतना का असफल प्रयास किया । उसने पुनः आक्रमण किया तथा विक्रमदेव को धोलपुर के निकट राजित किया । 1416 ई. में खिज्र खाँ ने विक्रमदेव से कर वसूल करने के लिए अपने वजीर मालिक ताज-उल-मूल्क को भेजा । विक्रमदेव का उत्तराधिकारी डुंगरेन्द्रसिंह 1424 ई. हुआ । उसके प्रारंभ में ही मालवा के शासक हुशंगशाह ने ग्वालियर किले की घेराबन्दी की । हुशंगशाह से पीछा छुडाने के लिए डुंगरेन्द्रसिंह को जौनपुर के शासक मुबारक शाह की सहायता लेने पड और उसे 'कर' भी देना पडा । 1438 ई. में डुंगरेन्द्रसिंह ने नरवर के गढ को घेर लिया । जो कुछ समय मालवा सुल्तान के अधीन था, यद्यपि डुंगरेन्द्रसिंह असफल रहा, परन्तु बाद में नरवर तोमरों के अधीन हो गया डुंगरेन्द्रसिंह का उत्तराधिकारी कीर्तिसिंह हुआ । इसे अपना अस्तित्व बनाए रखने कके लिए कभी जौनपुर तो कभी दिल्ली के मुस्लिम शासक को मित्र बनाना पडा ।

मुगलों के अधीन मध्यप्रदेश

- मुगल संस्थापक बाबर ने चंदेरी के राजा मेदिनीराय को 1528 ई. में हराकर उसकी पुत्रियों का विवाह हुमायू और कामरान के साथ कर दिया कालिंजर का दृढ दुर्ग मुगलों के आधिपत्य में आ गया । इसके पूर्व राणा सांगा को खानवा युद्ध (1527) में परास्त कर उसने मालवा पर भी नियन्त्रण कर लिया था ।
- शेरशाह सूरी (1540-1545) ने हुमायूं को परास्त कर सूरवंश की स्थापना की तथा मालवा, रायसेन, ग्वालियर को अपने अधीन किया । रायसेन में पूरणमल को झांसा देकर मारा गया, जो शहंशाह पर एक कलंक माना जात हैं । कालिंजर दुर्ग के घेरे के समय यद्यपि शेरशाह अंतिम दिन विजय हुआ, लेकिन विस्फोट में मारा गया ।
- अकबर (1555-1606) के समय मालवा के शासक बाज बहादुर पर आक्रमण किया गया । उसकी राजधानी मांडू ऐश्वर्य के साथ रानी रूपमति और बाजबहादुर के प्रणय-स्थल के रूप में भी विख्यात हो गयी थी बाजबहादुर परास्त हुआ, रूपमति ने आत्मदाह किया और बाजबहादुर को अकबर ने अपने नवरत्नों में स्थान दिया ।
- अकबर के समय की महत्वपूर्ण विजय थी - गोंडवाना वर्तमान मण्डला और जबलपुर तक व्याप्त गोण्डवाना राज्य की किर्ती रानी दुर्गावती के समय चरम पर थी अकबर के सेनापति आसफखां ने हमला बोला, दुर्गावती ने परास्त होने के पश्चात कटार घोपकर आत्म - हत्या की दुर्गावती की समाधि बरेला में बनी हैं । उल्लेखनीय है कि गढकटंगा (गढ - मण्डला) के इस राज्य की स्थापना यादव राय ने खिलजी पतन के समय की थी । इसका उत्थान संग्रामशाह के अधीन हुआ था, जिसने 52 गढों तक राज्य विस्तार किया था । उसने स्वर्ण, रजत मुद्राए चलायी थी । उसके पुत्र दलपतशाह का विवाह रानी दुर्गावती से हुआ था, जो चंदेल राजकुमारी थी । दलपत शाह की मृत्यु (1541) के बाद रानी दुर्गावती अल्पायु पुत्र वीरनारायण की संरक्षिका बनकर शासन संभाल रही थी । अकबर ने विजय उपरान्त गोण्डवाना गोंडवंश के ही चन्द्रशाह को अपनी अधिनता में सौंप दिया था
- उज्जैन के समीप धरमत युद्ध (1658 ई.) में औरंगजेब ने शाहजादा दारा को पराजित कर बादशाहत प्राप्त की थी ।
- खानदेश : वर्तमान निमाड, दक्षिण मालवा में विस्तृत दक्षिण का प्रवेश द्वारा था । यहाँ फारूकी वंश (दाउद, मीरन बहादूर) ने शासन किया । अकबर की अंतिम विजय खानदेश मानी जाती हैं (1600 ई.) । दाउद खानदेश साम्राज्य का स्थापक माना जाता हैं ।

आधुनिक इतिहास

- 1732 ई. तक म.प्र. में निम्न पांच मराठा राज्यों की नींव पड चुकी थी -

इन्दौर	-	होलकर राजवंश
धार	-	आनन्द राव पवार वंश
देवास, बडी पांती	-	तुकोजी राव पवार वंश
देवास, छोटी पांती	-	जीवाजी राव वंश
ग्वालियर	-	सिंधिया वंश

होल्कर वंश

मुगलों के पतन के बाद मालवा पर होल्कर वंश का राज स्थापित हुआ । वस्तुतः होल्करों को मालवा मराठा साम्राज्य के पांच सरदारों में विभाजनीकरण स्वरूप मिला था ।

- 1727 में मल्हारराव होल्कर को मालव के 5 महलों की सनद पेशवा से मिली थी और राज्य के इस भाग में मराठा राज शुरू हुआ । 1729 में धार-देवास के पवार राज को भी सनद मिली, लेकिन 1730 में

होल्कर को क्षेत्र का सर्वोच्च शासक स्वीकारा गया 1731 में सिंधिया को ग्वालियर क्षेत्र का शासक स्वीकारा ।

- पेशवा बाजीराव ने 1732 में मालवा सुबा होल्कर, सिंधिया और पवार के बीच विभक्त कर दिया ।
- 1761 के पानीपत के तृतीय युद्ध में हारकर लौटे मल्हार राव होल्कर की मालवा में स्थिति अधिक सुदृढ हुई । 1766 को उसकी मृत्यु (जिला भिंड) के बाद मालेराव होल्कर राजा बना लेकिन 1 वर्ष बाद ही चल बसा । तब उसकी माता अहिल्याबाई ने स्वयं शासन (1767) संभाला और 1797 तक अपने 30 वर्षीय शासनकाल में इतने लोकोपकारी कार्य किये कि जनता के मध्य वह लोकप्रिय हो गयी । उन्हे तुकोजी होल्कर नामक सेनापति ने शासनकार्य में महत्वपूर्ण सहयोग दिया । माता ने राज्य भर में कुंए, बावडियाँ, प्याऊ, धर्मशालाएँ आदि अधिक संख्या में बनवाएँ । अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति की माता अहिल्यादेवी भगवान शंकर की उपासिका थी और धार्मिक रूप से अत्यंत सहिष्णु थी । उनके दरबार में सबको न्याय मिलता था । कहते हैं कि उन्होने अपने एक प्रिय पुत्र को न्याय के लिए हाथी के पैरों तले कुचलवा देने का निर्णय दिया था । 1797 में माता अहिल्या ने अंतिम सांस ली ।
- अहिल्याबाई की मृत्यु के पश्चात् तुकोजीराव होल्कर ने प्रशासन कार्य संभाला, किन्तु 15 अगस्त 1797 को उनकी भी मृत्यु हो गई । इसके पश्चात् काशीराव, यशवंतराव प्रथम, तुलसाबाई तीनों ने मल्हारराव होल्कर के नाम पर शासन किया । अंतिम राजा तुकोजी तृतीय के समय इस राज्य का विलय मध्य भारत प्रांत में हुआ
- होल्कर वंश (तुकोजीराव होल्कर द्वितीय) ने 1857 के गदर में क्रांतिकारियों का गुप्त समर्थन किया था

<u>सिंधिया वंश</u>

- जैसा ऊपर बताया गया है, कि 1731 में मालवा का एक भाग सिंधिया को मिला था, उसके शासक राणोजी सिंधिया जी थे ।
- ग्वालियर में सिंधिया वंश के संस्थापक : राणोजी सिंधिया
- 1729 ई. में अमझेरा के युद्ध में राणोजी ने वीरता का प्रदर्शन किया था तथा पुणे दरबार से राणोजी को होल्कर वंश के समान भागीदारी दी गई, जिसमें उन्हें उज्जैन, शाजापुर और शुजावलपुर (शुजालपुर) आदि क्षेत्र प्राप्त हुए ।
- 1766 ई. में उत्तर भारत की आय के बँटवाये से पेशवा सरकार को 46 प्रतिशत तथा होल्कर एवं सिंधिया प्रत्येक को 21 प्रतिशत भाग प्राप्त होता था वर्ष 1745 में राणोजी की मृत्यु के पश्चात् सिंधिया वंश का सबसे प्रतापी राजा महादजी सिंधिया सत्तासीन हुआ ।
- 1761 में पानीपत युद्ध से भागकर आये महादजी सिंधिया ने लोकेन्द्र सिंह जाठ से ग्वालियर का किला छिना (1765) ।
- महादजी वीर योद्धा और कुशल प्रशासक थे ।
- महादजी ने ग्वालियर साम्राज्य की स्थापना की । उन्होंने दिल्ली के मुगल सम्राट पद पर शाह आलम को बैठाया और उस पर अपना नियंत्रण रखा । शाहआलम ने महादजी को अपना ''वकील'' (प्रधानमंत्री) बनाया ।
- 1794 में दौलम राव सिंधिया महादजी के उत्तराधिकारी बने । दौलत राव ने उज्जैन के स्थान पर लश्कर (ग्वालियर) को अपनी राजधानी 1810 में बनाया । इसके पश्चात् जाकोजी, जयाजीराव, माधव राव प्रथम और जीवाजीराव शासक बने । जीवाजी राव के समय ही मध्य भारत के राजाओं का एक संघ बना, जिसका नाम मध्य भारत देकर भारतीय संघ में उसके विलय का प्रस्ताव हुआ । मध्य भारत के पहले राजप्रमुख के रूप में जीवाजी राव सिंधिया ने 18 मई 1948 को शपथ ली ।
- जीवाजी राव के व्यस्क होने तक रियासत का प्रशासन चलाने के लिए महारानी की अध्यक्षता में कौंसिल ऑफ एजेंसी का गठन किया गया था ।
- महाराजा जीवाजी राव सिंधिया का विवाह राजमाता विजयाराजे से हुआ था । विजयाराजे का जन्म मध्यप्रदेश के सागर जिले में हुआ था ।
- मृदुला सिन्हा ने ''एक रानी ऐसी भी'' के नाम से राजमाता विजयाराजे की जीवनी लिखी है ।
- उल्लेखनीय है कि सिंधिया घराने ने 1857 के गदर में अंग्रेजों का समर्थन किया था ।
- मई 1948 को पं. जवाहरलाल नेहरू ने मध्य भारत राज्य के प्रथम राज प्रमुख के रूप में जीवाजी राव सिंधिया को शपथ दिलाई थी ।